

— संवत्सेरेणेह वै ज्ञाता विवर्धते MAITRUP. 6, 15. MBH. 1, 2992. 4864 (ववधुस्). (गर्भः) व्यवर्धत तदा शुक्लो तारापतिरिवाम्बरे 3, 16638. R. 2, 42, 2, 5, 3, 1. 33, 33. 41, 26. विवर्धती 1, 27, 7. MĀRK. P. 43, 54. इन्द्रशत्रो विवर्धस्व BHĀG. P. 6, 9, 11. 13. उदरेण विवर्धता MBH. 1, 4520. विना मल-यादयत्र चन्दनं न विवर्धते (प्रोक्तं v. l.) Spr. 2613. विवर्धमानैर्मल-सरित्सलिलैः BHĀT. 10, 58. VARĀH. BṚH. S. 21, 28. Verz. d. Oxf. H. 117, 6, 9. चन्द्रोदये विवर्धतम् (अम्भसो निधिम्) MBH. 8, 1804. बाले विवर्धते श्लेष्मा मध्यमे पित्तमेव तु Suçr. 1, 129, 12. विवर्धमाना कथा BHĀG. P. 3, 5, 13. धर्मः M. 9, 111. कृच्छयः MBH. 3, 2088. 4, 1918 (व्यवर्धत st. न्यवर्धत ed. Bomb.). तथा भूमिकृतं दानं सस्ये सस्ये विवर्धते 13, 3135. 7160 (विवर्ध-ति). HARIV. 11307. R. GORR. 2, 63, 18. 76, 25. 3, 43, 38. 5, 42, 15. Suçr. 2, 309, 18. 371, 21. Spr. 1460. 1524. 2450. 2596. 3417. 4466. Verz. d. Oxf. H. 37, 6, 9. v. u. अग्निः, देवम् Spr. 4782. विवर्धमानो वीर्येण समुद्र इव प-र्वणि R. 1, 55, 20 (56, 20 GORR.). धनवीर्येस्त्वं विवर्धस्व सुतेन च MĀRK. P. 21, 101. राष्ट्रम् gedeihen Spr. 3811. प्रजाः MBH. 1, 4342. 7746 (व्यवर्धन्). HARIV. 49. 6432 (विवर्धितुम्). 8933. Spr. 4574. समागमेन पुत्रस्य सावि-त्र्या दर्शनेन च । चतुषश्चात्मनो लाभान्निभिर्दिष्ट्या विवर्धते ॥ so v. a. du hast Grund dich zu freuen, — dich glücklich zu schätzen MBH. 3, 16880. fg. विवर्द्ध herangewachsen, gross geworden CYETĀCV. UP. 5, 11. MBH. 1, 6129. 7624. R. GORR. 1, 8, 32. KATHĀS. 2, 71. 14, 39. 34, 87. MĀRK. P. 43, 63. वृत्त R. GORR. 2, 117, 13. ताः शाखा विवर्द्धा शतयोजनम् 3, 39, 27. 5, 53, 3. VP. bei MUIR, ST. IV, 34. कर्षविवर्द्धवक्त्र R. 4, 6, 24. MBH. 4, 396. 13, 1081. दृष्ट्वा gross HARIV. 12949 (nach der Lesart der neueren Ausg.). कबन्ध R. 3, 74, 14. MĀRK. 92, 10. गोधनानि gross, zahlreich HARIV. 3729. अर्याः angewachsen Spr. 227. सन्न gesteigert BHĀG. 14, 11. बुद्धि R. 3, 28, 9. मनु 42. KUMĀRAS. 3, 71. तृष्णा 56. RAGH. 2, 32. 3, 60. BHĀG. P. 2, 7, 19. 3, 9, 25. 10, 6. 18, 19. 4, 2, 19. 21, 51. शत्रु zu Macht gelangt MBH. 12, 4207. Spr. 3734. — 2) sich erheben, entstehen: ततो कलकलाशब्दे व्यवर्धत MBH. 3, 805. 14, 2590. — विवर्धते HARIV. 3822 in der neueren Ausg. fehlerhaft für विवर्तते, wie die ed. Calc. liest. — Vgl. विवर्द्ध. — caus. 1) grossziehen, gross machen HARIV. 4202. 9920 (शीघ्रमेव व्यवर्धयत् die neuere Ausg.). KATHĀS. 24, 2. 160. वृत्तम् Spr. 2349, v. l. KUMĀRAS. 3, 14. बालत्रयम् HARIV. 9268. Etwas höher machen, erhöhen: समत्तादिवर्धयेत्तु-ल्यम् VARĀH. BṚH. S. 53, 116. vermehren, vergrössern, verstärken, ver- längern CĀRKH. Ça. 16, 20, 9. भारम् Spr. 1107. मांसं रक्तं च Suçr. 2, 307, 15. रतिं तस्य MBH. 4, 34. मदं च मदनं च Spr. (II) 93. अष्टवर्गम् KĀM. NĪ- TIS. 3, 79. MĀRK. P. 34, 12. 39, 40. द्विकविवर्धितं vermehrt um zwei VA- RĀH. BṚH. S. 72, 5. 77, 10. बलानि विवर्धयन्ति भूताम् so v. a. bewirken, dass manche Heere sich in Bewegung setzen, 30, 28. Jmd fördern, Jmd zur Wohlfahrt verhelfen: मित्राणि MBH. 12, 3441. R. 5, 7, 3. 6, 11, 20. प्रजास्तदुत्तरा नद्यो नभसेव विवर्धिताः RAGH. 17, 41. तपसा च विवर्धितः den man an Askese hat gewinnen lassen R. GORR. 1, 67, 4. — 2) ergötzen, erfreuen: विवर्धितश्च शशिभिर्हृद्यैः कव्यैश्च MBH. 3, 447. पितृदेवान् विवर्धयन् R. 7, 99, 18. — अभिवि s. अभिविवर्द्धि. — प्रवि, caus. partic. प्रविवर्धित in hohem Grade gesteigert: °वित्तेच्छ RĀGA-TAR. 4, 621. — संवि gedeihen: संव्यवर्धत भोगास्ते भुजानाः MBH. 1, 4977.

— सम् 1) act. erfüllen, gewähren: कामान्संवर्ध R. ed. Bomb. 2, 23, 42. — 2) heranwachsen, wachsen: सं धातरो वावधुः सौभगाय RV. 5, 60, 5. पुमान्संवर्धता मयि CĀRKH. GṆJ. 1, 17. यथामयः संवर्धे BHĀG. P. 16, 37, 7. संवर्द्ध aufgewachsen MBH. 1, 113. 3, 16667. 6, 2980. HARIV. 4202. R. 1, 8, 8. 2, 61, 3. R. GORR. 2, 58, 5. 62, 8. 80, 8. 3, 7, 27. 22, 29. 4, 21, 9. 5, 3, 28. Spr. 2721. RĀGA-TAR. 3, 130. gross gewachsen, gross gezogen: वृत्त Spr. 418, v. l. grösser geworden, verstärkt: वक्रि 1653. डाकिनीनादसंवर्द्धग-धवापसवाशित KATHĀS. 18, 147. MBH. 13, 1077 (संरुहे ed. Bomb.). चतूरंग RĀGA-TAR. 5, 382. आश्रमे चिरसंवर्द्धम् blühend R. 1, 55, 27 (56, 27 GORR.). अतिसंवर्द्ध sehr gross: अन् 2, 70, 23. — caus. 1) grossziehen, aufziehen, er- nähren, füttern MBH. 1, 8613. 4264. 5089. HARIV. 99. R. 1, 39, 18. 2, 53, 20 (53, 22 GORR.). R. GORR. 2, 17, 37. 64, 7. 3, 4, 19. Spr. 1672. 1803. 5102. KA- THĀS. 27, 5. 59, 98. MĀRK. P. 74, 49. 99, 35. PAÑĀR. 4, 3, 203. DAÇAK. 75, 14. fg. PAÑĀT. 182, 13. 188, 19. HIT. 26, 16. 58, 10. 70, 13. 113, 7. v. l. KULL. zu M. 2, 142. पादपान् aufziehen, pflegen RAGH. 3, 6. 13, 34. 14, 78. Spr. 418. अग्निम् verstärken MBH. 3, 258 (mit der ed. Bomb. संवर्धयन् zu lesen). R. 5, 50, 13. सूर्यः संवर्धयत्यग्निमग्निः सूर्यं स्वतेजसा VIKR. 158. निर्वाणरी-पस्य स्नेहः संवर्धयेच्छिखाम् beleben Spr. 2241. कोशम् vermehren, ver- stärken KĀM. NĪTIS. 3, 87. वर्षम् MBH. 1, 8279. जयेति वाचा महिमानमस्य संवर्धयन्ती कृषिषेव वक्रिम् KUMĀRAS. 7, 43. पशः MBH. 2, 1601. धर्मम् 13, 757. प्रीतिम् R. GORR. 1, 70, 13. आशाम् KĀM. NĪTIS. 5, 40. अनुग्रहम् KU- MĀRAS. 3, 3. रागम् Spr. 622. pflegen: दण्डम् ein Heer RAGH. 17, 62. म- ह्यम् zum Gedeihen bringen BHĀG. P. 1, 17, 42. शारङ्गसंवर्धिता मेदिनी so v. a. bepflanzt VARĀH. BṚH. S. 27, 1. beschenken mit (instr.) R. GORR. 2, 84, 13. RAGH. 4, 37. verschönern 3, 52 (संवर्धित zu lesen). — 2) = सं- वर्तय् erfüllen, gewähren: कामान् M. 11, 242. R. 2, 23, 42 (संवर्ध याहि भा ed. Bomb.).

— अभिसम् wachsen: वनस्पतिः । वर्षपूगाभिसंवर्द्धः so v. a. sehr alt MBH. 12, 5805.

2. वर्ध, वर्धयति DHĀTUP. 32, 111 (ह्रनपूराणयोः). abscheiden: वर्धित abgeschnitten H. an. 3, 291. MED. t. 149. वर्धयति dass. WEBER, KṢHNAĞ. 302. — Vgl. 2. वर्धक, वर्धकि, 2. वर्धन, वर्धापन.

3. वर्ध, वर्धयति DHĀTUP. 33, 109 (भाषार्थ, v. l. भासार्थ).

वर्ध (von 1. वर्ध) 1) adj. mehrend, verstärkend; erfreuend; s. नन्दि, मित्र°. — 2) m. a) parox. das Gedeihenmachen, Fördern: अर्चामि वा वर्धापयौ धृतस्त्वं RV. 10, 12, 4. — b) Clerodendrum Siphonanthus R. Br. GATĪDH. im ÇKDR. — 3) n. Blei H. 1041.

1. वर्धक (vom caus. von 1. वर्ध) 1) adj. mehrend, verstärkend; s. अग्नि°. — 2) m. Clerodendrum Siphonanthus R. Br. AK. 2, 4, 2, 8.

2. वर्धक (von 2. वर्ध) 1) adj. abscheidend, scheuerend; s. माष°, समु°. — 2) m. Zimmermann R. GORR. 1, 12, 6; vgl. वर्धकि.

वर्धकि (wie eben) m. Zimmermann AK. 2, 10, 9. 3, 4, 2, 4. H. 917. HA- LĀ. 2, 432. UÉGVAL. zu UNĀDIS. 4, 118. MBH. 3, 255. R. 2, 80, 2. त्रिदश-नाम् MBH. 1, 2592. HARIV. 162. — Vgl. देव°.

वर्धकिन् m. dass. ÇABDAR. im ÇKDR. MBH. 13, 1223. R. GORR. 2, 87, 2. 7, 91, 24. VARĀH. BṚH. S. 43, 22.

1. वर्धन (von 1. वर्ध) oxyt. P. 3, 2, 149. Schol. proparox. (संज्ञायाम्) gaṇa नन्त्यादि zu 3, 1, 184. 1) adj. (f. ṣ) a) wachsend, zunehmend; =